

किसान मेला 2023

प्राकृतिक खेती एवं पोषक अनाज
की खेती से किसानों की समृद्धि



डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा, समस्तीपुर

23 24 25
फरवरी, 2023



आयोजक
प्रसार शिक्षा निदेशालय
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा
समस्तीपुर-848 125 (बिहार)

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

किसान मेला - 2023

23-25 फरवरी, 2023

हमारे देश की अधिकांश आबादी के जीविकोपार्जन हेतु कृषि अत्यन्त उपयोगी है और कोई भी संस्कृति कृषि के बिना टिकाऊ नहीं हो सकती है। यह भारत के 58% जनसंख्या को रोजगार प्रदान करने वाला एकमात्र सबसे बड़ा निजी व्यवसाय है और राष्ट्रीय सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 20% इसी क्षेत्र से आता है। जबकि कृषि की उत्पादकता कई चुनौतियों का सामना कर रही है। बढ़ती जनसंख्या के भोजन की आवश्यकता पूर्ति हेतु हमारे प्राकृतिक संसाधनों का ह्रास हो रहा है। साथ ही साथ जलवायु परिवर्तन भी समस्या को बढ़ाने में सहायक हो रहा है। वर्षा की अनिश्चितता के कारण लगातार सूखे तथा बाढ़ की स्थिति का सामना करना पड़ता है जो कि मिट्टी के स्वस्थ के ह्रास, पोषक तत्वों की कमी तथा पानी की उपयोगिता में कमी का मूल कारण है। भारतीय कृषि में छोटे जोतदारों की प्रधानता है और इन चुनौतियों का सामना उन्हें सबसे अधिक करना पड़ता है। ये छोटे जोत वाले किसान बेहतर कृषि के लिए विकसित नवीनतम तकनीकियों में निवेश तथा उसको अपनाने में अक्षम हैं। टिकाऊ खेती तथा कृषि आय बढ़ाने हेतु आज आवश्यकता है कि हम कम लागत पर अधिक उत्पादन तथा प्राकृतिक संसाधनों का बेहतर उपयोग करें।

प्राकृतिक खेती एक रसायन मुक्त कृषि पारिस्थितिकी आधारित विविध कृषि प्रणाली है जोकि फसलों, पेड़ों तथा पशुओं को जैव विविधता के साथ एकीकृत करती है। प्राकृतिक खेती का उद्देश्य पारंपरिक स्वदेशी तरिकों को बढ़ावा देना है जोकि बाहरी निवेश को कम करता है। वैश्विक स्तर पर किसान पहले से ही जैविक खेती तथा प्राकृतिक खेती द्वारा कृषि का उत्थान कर रहे हैं। प्राकृतिक खेती लागत प्रभावी एवं पारिस्थितिक अनुकूल होने के कारण कृषि के सतत विकास में उत्प्रेरक का कार्य कर रहा है। यह पूरे वर्ष बेहतर उत्पादन, फसल विविधता तथा पोषण के साथ आय सृजन करने वाले फसल द्वारा खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करता है। जल और पारिस्थितिक संरक्षण प्राकृतिक खेती का वो पहलू है जोकि जल की उपलब्धता एवं प्रबन्धन के साथ खेती से होने वाले कार्बन डाईऑक्साईड उत्सर्जन को कम करता है। यह भूमिक्षरण का रोकथाम, समृद्ध के अम्लीयता तथा प्रदूषण में कमी लाकर मानव समुदाय में अच्छा स्वास्थ्य सुनिश्चित करने में मदद करता है। इस समय किसानों के आय में वृद्धि द्वारा बेहतर आजीविका प्रदान करने हेतु लचीली कृषि की अत्यंत आवश्यकता है।

भारत में हरित क्रांति की शुरुआत 1960 के दशक में भूख और गरीबी को कम करने के लिए की गई थी। हरित क्रांति के बाद गेहूँ और चावल का उत्पादन दोगुना हो गया लेकिन अन्य खाद्य फसलों जैसे कि देशी चावल की किस्मों और कदन्न फसलों के उत्पादन में गिरावट आई। जिससे खेती में देशी फसलों को नुकसान हुआ और विलुप्त होने का भी कारण बना। हरित क्रांति के बाद एकल फसल प्रणाली पर जोर देने से अनाज आधारित उत्पाद नियमित भारतीय आहार पर हावी हो गया और पारंपरिक खाद्य पदार्थ समय के साथ कम हो गये। देशी चावल की किस्मों और कदन्न फसल सूखे, लवणता और बाढ़ प्रतिरोधी होते हैं। कदन्न फसलों कम अवधि की होती है और अन्य अनाजों की तुलना में इसमें पानी की भी खपत बहुत कम होती है। पोषक अनाजों में मौजूद पॉलीफेनोल्स एंटीऑक्सीडेंट के रूप में काम करते हैं और रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाते हैं। कदन्न फसलों को बढ़ावा देने हेतु वर्ष 2023 को "अन्तर्राष्ट्रीय पोषक अनाज वर्ष" के रूप में मनाया जा रहा है। इन्हीं को ध्यान में रखते हुए इस वर्ष विश्वविद्यालय "प्राकृतिक खेती एवं पोषक अनाज की खेती से किसानों की समृद्धि" विषय पर किसान मेला का आयोजन करने जा रहा है।

किसान मेले के उद्देश्य इस प्रकार हैं:-

- ✓ प्राकृतिक संसाधनों के पुनर्प्राप्ति उपयोग के माध्यम से पारिस्थितिकी तंत्र का पुनरुद्धार।
- ✓ समाजिक रूप से न्यायसंगत और टिकाऊ कृषि उत्पादन प्रणाली को बढ़ावा देना।
- ✓ पर्यावरण के अनुकूल कृषि पद्धतियों के सतत् ज्ञान और कौशल का प्रदर्शन।
- ✓ प्रकृति आधारित खेती के तहत नवाचार के माध्यम से ज्ञान आधारित उद्यमिता का विकास।
- ✓ पोषण सुरक्षा के लिए पोषक अनाज की खेती को लोकप्रिय बनाना।
- ✓ उपभोक्ताओं के बीच कदन्न फसलों के महत्व और पोषण संबंधी लाभों का प्रसार।
- ✓ प्राकृतिक खेती में पशुपालन, मत्स्य पालन और मधुमक्खी पालन की भूमिका।
- ✓ प्राकृतिक खेती में बागवानी फसलों के लिए उत्पादन प्रौद्योगिकी का मानकीकरण।
- ✓ नई तकनीकियों तथा कृषि व्यापार को संस्थान, उद्योगों और नीति निर्माताओं के बीच पहुँचाना।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

कृषि शिक्षा की जन्मस्थली में अवस्थित स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति देशरत्न डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के नाम पर स्थापित इस विश्वविद्यालय ने स्थापना काल से ही कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान के क्षेत्र में अमूल्य योगदान दिया है। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा (बिहार) अपने विभिन्न कृषि विज्ञान केंद्रों, अनुसंधान एवं शिक्षा संस्थानों के विभिन्न कार्यक्रमों द्वारा कृषि के विकास एवं प्रसार में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका के निर्वहन में सदैव तत्पर है।

आमंत्रण

कृषि एवं कृषि के विभिन्न आयामों से सम्बद्ध व्यक्तियों, संस्थानों, कृषक संगठनों, उत्पादकों एवं विपणन संघों को इस किसान मेले में स्टॉल प्रदर्शन, निरूपण एवं सहभागिता हेतु विश्वविद्यालय परिवार आप सभी को सादर आमन्त्रित करता है।

प्रदर्शकों के लिए उपलब्ध सुविधाएँ

- ✓ प्रत्येक प्रदर्शनी स्टॉल पर 2 मेजें, 2 कुर्सियाँ और आवश्यक बिजली की आपूर्ति उपलब्ध होगी।
- ✓ ऊपर वर्णित सुविधाओं एवं दरों में परिवर्तन, छूट एवं रियायत का सर्वाधिकार विश्वविद्यालय मेला प्रशासन के पास सुरक्षित रहेगा।

स्टॉल

इस मेले में प्रदर्शनी हेतु विश्वविद्यालय द्वारा निम्न प्रकार के स्टॉल उपलब्ध कराये जायेंगे:

- ✓ तीन तरफ से घिरे आच्छादित स्टॉल
4 मीटर X 4 मीटर (16 वर्गमीटर) दर रु. 8000.00 (आठ हजार रुपये) मात्र।

कार्यक्रम

- 23 फरवरी, 2023 (गुरुवार) पंजीकरण, उद्घाटन एवं प्रदर्शनी
- 24 फरवरी, 2023 (शुक्रवार) पंजीकरण, प्रदर्शनी, गोष्ठी, सेमिनार, प्रक्षेत्र-भ्रमण
- 25 फरवरी, 2023 (शनिवार) पंजीकरण, प्रदर्शनी, गोष्ठी, मूल्यांकन, समापन समारोह

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा कैसे पहुँचे



मेला स्मारिका के लिए विज्ञापन का आकार एवं दरें।

क्रम सं.	आकार	(दर रु.)
1	बैंकसाइड फुल रंगीन पृष्ठ	1,00,000.00
2	इनसाइड कवर रंगीन पृष्ठ	75,000.00
3	आधा रंगीन पृष्ठ	50,000.00
4	चौथाई रंगीन पृष्ठ	25,000.00

विज्ञापन अंग्रेजी और हिन्दी दोनों में और साथ ही साथ प्रिंट करने के लिए तैयार प्रारूप में सॉफ्ट कॉपी भेजी जा सकती है। इसका भुगतान "Kisan Mela- RPCAU, Pusa" के नाम पंजाब नेशनल बैंक, डा. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा A/C No.: 4512000100027244 (IFSC Code: PUNB0451200) को नगद/ डिमांड ड्रॉफ्ट/ UPI से किया जा सकता है। राशि भुगतान करने के पश्चात ई-मेल anupmakumari@rpcau.ac.in पर सूचित करें।

सम्पर्क सूत्र

डॉ. एम. एस. कुण्डु

निदेशक प्रसार शिक्षा
टेलीफैक्स : 0627-240251
मो0- 6287797109
ई-मेल : dee@rpcau.ac.in

डॉ. अनुपमा कुमारी

उप निदेशक प्रसार-II
आयोजन सचिव
मो0- 6287797197
ई-मेल : anupmakumari@rpcau.ac.in

डॉ. जितेन्द्र प्रसाद

उप निदेशक प्रसार-I
सह आयोजन सचिव
मो0- 6287797198
ई-मेल : ddel.rpcau@gmail.com

डॉ. आर. के. तिवारी

वरीय वैज्ञानिक सह प्रधान (के.भी.के, बिरोली)
सह आयोजन सचिव
मो0- 6287797157
ई-मेल : ravindra@rpcau.ac.in

डॉ. एम. एल. मीणा

वरीय वैज्ञानिक सह प्रधान (के.भी.के, तुर्की)
सह आयोजन सचिव
मो0- 6287797167
ई-मेल : head.kvk.turki@gmail.com

KISAN MELA 2023

**“Natural Farming and Nutri-Cereal
Cultivation for Farmers Prosperity”**



Dr. Rajendra Prasad Central Agricultural University
Pusa, Samastipur

23 24 25

February, 2023



Organized by
Directorate of Extension Education
Dr. Rajendra Prasad Central Agricultural University
Pusa, Samastipur - 848125 (Bihar)

Dr. Rajendra Prasad Central Agricultural University, Pusa

Kisan Mela 23-25 February, 2023

The agriculture is the backbone to support livelihood to majority of the population, without agriculture no culture is sustainable. It is the single largest private profession providing employment to about 58 per cent of population of India. Around 20% of the National GDP comes from agricultural operation. However, agriculture is facing several intimidating challenges related to its productivity and profitability. The increasing human population and its requirement for food continuously depleting the natural resource base which further aggravated by climate change. The Climate risks and weather unpredictability made the situation more troublesome for the crop production. The variability in monsoon, rainfall causes frequent drought and flood and indiscriminate use of inorganic fertilizers are the root cause for deterioration of the soil health, low nutrient and water use efficiency. The Indian agriculture is predominated by small holder, these small holders are victim of this situation and they have mostly faced the brunt of these challenges. The vulnerability of these stakeholders due to climate change is very high and they are less capable to invest to purchase the input required for adoption of recent technologies developed for better agriculture. The biosphere is fragile due to the ethical and sustainability trade-offs. Therefore, there is a need for increased production at lower costs, and better use of energy and natural resources for achieving sustainable developmental goals and augmenting farm income.

Natural Farming (NF) is a chemical-free agro-ecology based diversified farming system which integrates crops trees and livestock with functional biodiversity. Natural Farming in recent years is aimed at promoting traditional indigenous practices which reduces externally purchased inputs. Farmers across the globe are already practicing the regenerative agriculture in a form of either organic farming or natural farming. NF being a cost-effective and ecologically compatible alternative would be a catalyst in achieving the Sustainable Development Goals. The NF would ensure food security and zero hunger through better yield, diversity in cropping and access to nutritional sources and income-generating crops throughout the year. The water-conservation and ecological-preservation aspects of NF contribute to the availability and sustainable management of water and reduction of CO2 emissions in various stages of agriculture. NF would ensure good health in the community through prevention of land degradation, reduction of ocean acidification and marine pollution from land-based activities. So resilient agriculture is the utmost need in this hour to sustain the farming with increase in farm income and to support the farming community for providing decent livelihood.

The Green Revolution in India was initiated in the 1960s in order to alleviate hunger and poverty. Post-Green Revolution, the production of wheat and rice doubled but the production of other food crops such as indigenous rice varieties and millets declined. This led to the loss of distinct indigenous crops from cultivation and also caused extinction. The traditional foods and cereal-based products that once occupied a part of the regular Indian diet are lost in time due to the emphasis on mono-cropping post-Green Revolution. The indigenous varieties of rice and millets are resistant to drought, salinity, and floods. The growing season of millets is short and the consumption of water for its cultivation is very less when compared to other cereals. The polyphenols present in millets acts as antioxidant and boost immunity. Year 2023 is celebrating as **“International year of Millets”**.

Keeping these in mind this year the University is going to organize the Kisan Mela on the theme of **“Natural Farming and Nutri-Cereal Cultivation for Farmers Prosperity”**.

The objectives of the Kisan Mela are as follows: -

1. Revival of ecosystem through regenerative use of natural resources.
2. Fostering a socially equitable and sustainable agricultural production system.
3. Showcasing comprehensive knowledge and skills of eco-friendly agricultural practices.
4. Development of knowledge base entrepreneurship through innovation under nature-based farming.
5. Popularization of Nutri-cereals cultivation for Nutritional security
6. Spread the importance and nutritional benefits of millets among consumers
7. Role of livestock farming, fisheries and apiculture in natural farming
8. Standardization of production technology for Horticultural crops in Natural farming.
9. Technology outreach and agri-trade for convergence of farm with institute, industries and policy makers

Dr. Rajendra Prasad Central Agricultural University, Pusa

Established in the birth place of Agriculture Research & Education and named after the first president of India late Dr. Rajendra Prasad, our University has contributed a lot to Agriculture Education, Research & Extension. The University is always ready to extend its full supports to the development of agriculture & allied sector targeting the development of farmers.

Invitation

Individuals & organizations related to Agriculture and allied vocations, farmers, institutions, government & non-government organization, producers & marketing federations are cordially invited to participate, attend and cooperate in exhibition of Kisan Mela-2023.

Facilities Available In The Stall For Exhibitors

1. There shall be 2 tables, 2 chairs with supply of electricity points in the stall.
2. The university has full right to change, make concession and relief of the rates quoted for stalls.

Programme

- 23 February, 2023 (Thursday) - Registration, Inauguration and Exhibition
24 February, 2023 (Friday) - Registration, Exhibition, Gosthi, Seminar and Field visits
25 February, 2023 (Saturday) - Registration, Exhibition, Gosthi, Evaluation and Valedictory programme

Stall

The following type of stall will be provided by university during mela:
Three side covered stall
4 Meter x 4 Meter = 16 sqm (Rate Rs. 8000.00)

Advertisement size and rates for Mela Souvenir

Sl. No.	Size	Rate (Rs.)
1	Backside Full Colour Cover Page	1,00,000.00
2	Inside Full Colour Cover Page	75,000.00
3	Half Page Colour	50,000.00
4	Quarter Colour Page	25,000.00

The advertisement contents may please be sent both in english and hindi as well as soft copy in ready to print formate. Payment can be made through DD in favour of **“Kisan Mela- RPCAU, Pusa”** A/C No.: **4512000100027244 (IFSC Code: PUNB0451200)** through **Cash/ Demand Draft/ UPI** Payment can be made. Kindly inform the deposited amount detail in E-mail anupmakumari@rpcau.ac.in.

CONTACT DETAILS

Dr. M. S. Kundu
Director Extension Education
Tele fax: 06274 - 240251
Mobile- 6287797109
Email-dee@rpcau.ac.in

Dr. Anupma Kumari
Deputy Director Extension- II
Organizing Secretary
Mobile- 6287797197
Email-anupmakumari@rpcau.ac.in

Dr. Jitendra Prasad
Deputy Director Extension- I
Co-Organizing Secretary,
Mobile No.- 6287797198
E-mail- dde1.rpcau@gmail.com

Dr. R. K. Tiwari
Senior Scientist & Head
(K.V.K., Birauli)
Co-Organizing Secretary
Mobile- 6287797157
Email-ravindra@rpcau.ac.in

Dr. M. L. Meena
Sr. Scientist & Head
(K.V.K., Turki)
Co-Organizing Secretary,
Mobile No.- 6287797167
E-mail- head.kvk.turki@rpcau.ac.in